दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/18(JS)–HL-**HL1**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Jagdish Bangerwa.

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | ✓ |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 1 31 - 7 - 18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): जगदीश

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) 'कन्नौजी' बोली का परिचय

कन्नौजी हिन्दी की एक बोली है जो पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग में शामिल है। मूलतः यह शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई बोली है जिसका प्रयोग क्षेत्र कन्नौज (फर्रुखाबाद जिला), कानपुर, इटावा, हरदोई, पीलीभीत का क्षेत्र है।

कुछ विद्वान इसे ब्रजभाषा का ही रूप मानते हैं जबकि ग्रियर्सन ने इसे एक अलग बोली माना।

कन्नौजी की व्याकरणिक विशेषताएँ :-

→ कन्नौजी में शब्दों को उकारान्त करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। जैसे - रामु, घरु

→ ब्रजभाषा के प्रभाव से इसमें संज्ञाओं को ओकारान्त भी कर दिया जाता है। जैसे - नोकरो

→ हिन्दी की पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की अन्य बोलियों की भाँति इसमें भी अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
e do not write ng except the on number in ace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अतिरिक्त इसकी अन्य विशेषताएँ

→ व्यंजन संयोग की प्रवृत्ति
बादशाह को 'बादसाह' तथा 'लोभ मत करो' को 'लोभति करो' के रूप में उच्चरित किया जाता है।

→ इसमें शब्दों के मध्य के 'ह' वर्ण का लोप करने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है जैसे - बहुत → बउत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक खड़ी बोली और खुसरो की कविता

अमीर खुसरो 13वीं सदी के एक संत तथा दरबारी कवि थे जो अपनी भाषायी प्रयोगशीलता के लिए जाने जाते हैं।

खुसरो ने 14वीं सदी में खड़ी बोली के पूर्ण विकास से 500 वर्ष पहले ही खड़ी बोली की साहित्यिक संभावनाओं को दिखा दिया था। शुक्ल जी आश्चर्यचकित होकर कहते हैं कि "क्या भाषा किसकी इतनी चिकनी हो गई थी कि आज की खड़ी बोली खुसरो के काल में दिखाई पड़ती है।

खुसरो की पहेलियों तथा मुकरनों में तो खड़ी बोली अपने मूल स्वरूप में दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।"

इसी प्रकार उनके मुकरनों भी खड़ी बोली के वर्तमान रूप का प्रमाण है -

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पान क्यों सड़ा,
घोड़ा क्यों अड़ा,
फेरा न था।

खुसरो न केवल खड़ी बोली बल्कि ब्रज तथा खड़ी बोली के भाषायी मिश्रण के लिए भी प्रयोगशीलता के चरम स्वर छूते हैं -

खुसरो रैन सुहाग की, जागी पी के संग।
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भए एक रंग॥

अमीर खुसरो द्विभाषायी प्रयोगशीलता का ही परिणाम हुआ कि कालान्तर में खड़ीबोली की काव्यभाषा के रूप में क्षमता पर प्रश्न खड़े करने वालों को जवाब दिया जा सका।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय

भोजपुरी 'बिहारी हिन्दी' उपभाषा वर्ग की बोली है जो अपना ऐतिहासिक अस्तित्व मागधी अपभ्रंश मे खोजती है। इसका प्रयोग क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार का भोजपुर क्षेत्र है जिसमे मुख्यत: गोरखपुर, बनारस, बलिया, आरा, छपरा, चम्पारण आदि जिले शामिल हैं।

भोजपुरी की व्याकरणिक विशेषताएँ —

- ड़ का 'र' के रूप में तथा 'ण' का 'न' के रूप में उच्चारण
  जुड़े → जुरे, बाण → बान
- 'य' तथा 'ज' मे उच्चारण द्वैत
  जजमान ⇌ यजमान
- संज्ञा के तीन रूप
  जैसे → घोरा, घोरवा, घोरउआ
- 'इया' तथा 'उवा' जैसे प्रत्ययों से संज्ञाओं का रूप परिवर्तन
  जैसे - खटुलवा, कितनिया

~~ध्यान~~ पदसंरचना

- सर्वनाम – हमरा, तोहरा, ओकरा, जौन, किधु,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लखें।

ase do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

कोउ जैसे सर्वनाम

संज्ञा रूप तथा कारक व्यवस्था – इसके संज्ञा रूप प्रायः अवधी के समान हैं।

क्रियारूप

वर्तमान काल – 'त' रूप (जात)

भूतकाल – 'ल' रूप (गइल)

भविष्य काल – 'ब' रूप (जइब)

भोजपुरी हिन्दी भारत के अलावा नेपाल, मॉरिशस, फिजी, त्रिनिदाद इत्यादि देशों में भी फैली है जो हिन्दी का आधार व्यापक बनाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिंदी भाषा का क्षेत्र

हिंदी भाषा उत्तरी भारत में बोली जाने वाली आधुनिक आर्य भाषा है जो मुख्यतः प्रयोग की दृष्टि से तीन क्षेत्रों में विभाजित की जा सकती है -

भाग 'अ' - हिन्दी बोलने, समझने तथा लिखने की प्रथम भाषा
- 10 राज्य (दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड)

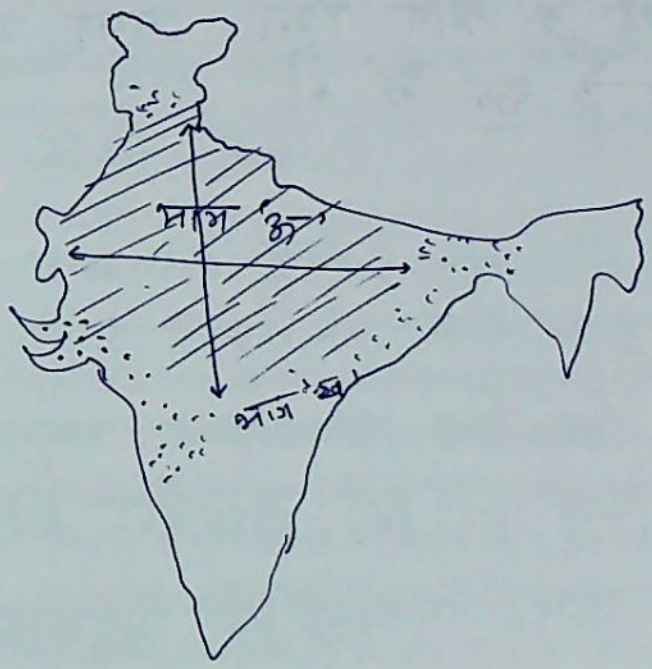

भाग 'ब' - हिन्दी केवल समझने, बोलने की द्वितीय भाषा

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

- ये हिन्दी भाषी राज्यों के निकट स्थित उन अन्य भाषाओं के क्षेत्र हैं जिनका उद्भव भी हिन्दी के साथ हुआ है-

पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, ओडिशा

भाग 'ज' - जहाँ हिन्दी नहीं समझी जाती

- उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण के 6 राज्य

इनके अलावा विश्व में नेपाल, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, सूरीनाम में भी प्रवासी भारतीयों के कारण हिन्दी प्रथम या द्वितीय भाषा के रूप में है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य में प्रारंभिक खड़ी बोली का स्वरूप

सिद्ध साहित्य सिद्धों द्वारा अपनी साम्प्रदायिक - धार्मिक मान्यताओं के प्रचार हेतु लिखा गया साहित्य है जिसमें सहज शून्य साधना, मायायोग, आडम्बर विरोध, ~~वर्ण~~ वर्णव्यवस्था खण्डन इत्यादि पर लिखा गया है।

इस साहित्य की भाषा मुख्यतः अर्द्धमागधी अपभ्रंस है जिसमें आरम्भिक खड़ी बोली की प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं -

~~बोलहिं~~ पंडिअ सअल सत्य बक्खाणअ
देहहिं बुद्ध बसंत ण जाणअ "

"जह मण पवण न संचरइ रवि ससि णाह पवेस
तहिं बढ़ चित्त विसाम कर करहं सरहु उऐस।"

उपर्युक्त उदाहरणों से खड़ी बोली की निम्नलिखित विशेषताएँ देखी जा सकती हैं -

→ आकारान्त या इकारान्त शब्दों का प्रयोग तुलनात्मक रूप से अधिक हुआ है।

→ न के स्थान पर ण का प्रयोग किया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ लिखें।
se do not write hing except the tion number in pace)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- अल्पप्राणीकरण के प्रयास में क, च तथा 'त' वर्ग के अल्पप्राण व्यंजनों का 'अ' में रूपान्तरण।
- अनुस्वार तथा अनुनासिक का अल्पधिक प्रयोग

यह सिद्ध नाथों की भाषिक परंपरा थी जो कबीर व रहीम के हाथों परिपक्व हुई थी तथा 19वीं सदी में खड़ी बोली हिन्दी के रूप में एकमात्र काव्यभाषा बन प्रतिष्ठित हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this

ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली है जो शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है।

मध्यकाल में ब्रजभाषा सूर के हाथों परिष्कृत तथा परिमार्जित हुई तथा रीतिकालीन कवियों के हाथों उसकी कलात्मकता को छूते हुई अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

ब्रज में निहित उसकी कलात्मकता के कारण -

- आर्थिक समृद्धि - ब्रज का विकास आगरा, मथुरा, वृन्दावन के आस-पास की उपजाऊ भूमि में हुआ जिस कारण ब्रज में माधुर्य एवं प्रसाद गुण का स्वभाविक समावेश हुआ क्योंकि आर्थिक समृद्धि के कारण जीवन में संघर्ष नहीं था।

- सांस्कृतिक कारण - ब्रज मूलतः कृष्णभक्ति के लिए प्रयुक्त भाषा थी एवं कृष्ण का जीवन संघर्षमय न होना कलात्मक व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ लिखें।
use do not write thing except the tion number in space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शृंगारिक था अतः ब्रजभाषा में स्वभाविक तौर पर छ, म, न, ल जैसी ध्वनियों से कोमलता व मधुरता का समावेश हुआ।

- राजनीतिक कारण — ब्रज भाषा के विकास का समय राजनीतिक रूप से मुगलों के केन्द्रीय शासन का काल है जब युद्धों का प्रायः अभाव था। ऐसे में दरबारी कवि वीरता की बजाय शृंगार पर बल देते थे तथा ब्रज की मधुरता निखर कर सामने आई।

- सांस्कृतिक कारण — कृष्ण भक्त कवि समाज की पीड़ाओं तथा संघर्ष से परे मन्दिरों में रहते थे तो उनकी भाषा भी कोमल रही न कि संघर्षपूर्ण। सूर का अंधा होना भी ब्रजभाषा की मधुरता में सहायक रहा क्योंकि दृष्टिहीन होने की वजह से सूर ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विभाव पक्ष से बचते हुए अनुभाविक चित्रों से ब्रज में गहन बिम्बात्मक क्षमताएँ भर दीं।

बिहारीलाल ने तो ब्रज में संगीत तथा चित्रकला के आनन्द को भी भर दिया जिससे ब्रज की कोमलता और उभरी।

ब्रजभाषा की कलात्मकता का ही कारण था कि मध्यकाल में ब्रज का चरम साहित्यिक विकास हुआ तथा ब्रज अखिल भारतीय काव्यभाषा बनकर सामने आई। ब्रज की अद्भुत कलात्मकता, बिम्बात्मक, कोमलता, लयात्मकता को बिहारी के निम्नलिखित दोहे में देखा जा सकता है जहाँ बिहारी ने एक ही दोहे में एक चलचित्र को समाहित कर दिया है

कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सौं बात॥

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली हिन्दी आज की मानक हिन्दी का आधार है तथा उसकी भाषिक विशेषताएँ मानक हिन्दी से मिलती-जुलती हैं।

ऐतिहासिक रूप से शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई खड़ी बोली "पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग" में शामिल है। इसका प्रयोग क्षेत्र दिल्ली से देहरादून तक फैला है जिनमें मेरठ, गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर, सोनीपत, कुरुक्षेत्र आदि जिले शामिल हैं।

खड़ी बोली की व्याकरणिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं में देखा जा सकता है-

- ध्वनि सम्बन्धी विशेषताएँ
  - ड़ को 'ड़' रूप में, ल को 'ळ' रूप में, न को 'ण' रूप में तथा ड़/ढ़ को ड/ढ रूप में उच्चरित करना खड़ी बोली की विशेषता है।
    उदा. - काला - काळा, चैन - चैण
  - आरम्भिक स्वर को कभी-कभी विलुप्त कर देने की प्रवृत्ति खड़ी बोली में है। जैसे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इकट्ठा – कट्ठा

- व्यंजन का द्वित्वीकरण – विशेषतः खड़ी बोली में परवर्ती व्यंजन को द्वित्वीकृत कर दिया जाता है। बापू – बाप्पू
- औ तथा ऐ का एं तथा ओ रूप में उच्चारण किया जाता है।
  जैसे- औरत – ओरत
- आकारान्तता की प्रवृत्ति।

<u>व्याकरणिक विशेषताएँ</u>

कारक व संज्ञा रूप
- कर्ता की हिं विभक्ति से कई कारकों का काम चलाया जाता है।

कर्ता – ने, नैं, नै
कर्म – ने, को, इं, कः
करण – ~~खातर, के वास्ते~~ सूँ, से
सम्प्रदान – खातर, के, वास्ते
अपादान – से, दूँ
सम्बन्ध – का, के, की, रा, रे, री

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

सर्वनाम	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	वह, उनका	वे, उनका
मध्यम पुरुष	तुम, तम	थारा, तमलोग
उत्तम पुरुष	मुझ, म्हारा	हमारा

विशेषण - विशेषण, विशेष्य के साथ प्राय: अविकारी, केवल आकारान्त विशेषण संज्ञाओं के लिंग के साथ विकारी होते हैं

वचन - एँ, ओं परसर्गों से बहुवचन का निर्माण
- बात - बातां

लिंग · ई, नी, आइन प्रत्यय से स्त्रीलिंग

क्रियारूप -
वर्तमान काल - जाऊं हूँ, जावे है (ऊ रूप)
भूत काल - चल्या गया (या रूप)
भविष्य काल - जाऊंगा (गा रूप)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पया इस स्थान में प्रश्न ख्या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

lease do not write ything except the estion number in s space)

(ग) अपभ्रंश के अध्ययन के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख करते हुए अपभ्रंश के प्रमुख भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषाओं की तीसरी अवस्था का नाम है जिसका शाब्दिक अर्थ - भ्रष्ट भाषा है अर्थात जिस भाषा का विकास संस्कृत के विकृत रूप से हुआ हो।

अपभ्रंश के अध्ययन के प्रमुख स्रोत —

- बौद्ध साहित्य
  - सिद्ध साहित्य - सरहपा, लुईपा, कण्हपा द्वारा लिखित चर्यापद तथा दोहाकोश जैसी रचनाएँ।
  - नाथ साहित्य - गोरखनाथ, चर्पटीनाथ, जलंधरनाथ की रचनाएँ
- जैन साहित्य - पुष्पदंत द्वारा लिखित महापुराण, स्वयंभू द्वारा लिखित पउम चरिउ, [illegible] की रचनाएँ इत्यादि
- रासो रचनाएँ - खुमाण रासो, पृथ्वीराज रासो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

जैनी वीरगाथात्मक रचनाएँ तथा जैन कवियों द्वारा ~~लिखित~~ उपदेश रसात्मक रास, भरतेश्वर बाहुबलि रास जैसी उपदेश मूलक रास रचनाएँ।

अपभ्रंश के बारे में विवाद है कि यह भाषा है अथवा भाषिक विकास की एक अवस्था। अपभ्रंश को भाषा मानने वाले लेखकों ने इसके भेद कई माने जैसे -

नमिसाधु - उपनागर अपभ्रंश, आभीर अपभ्रंश, ग्राम्य अपभ्रंश

मार्कण्डेय - नागर अपभ्रंश, उपनागर अपभ्रंश, व्राचड़ अपभ्रंश

डॉ तगारे - दक्षिणी अपभ्रंश, पूर्वी अपभ्रंश, पश्चिमी अपभ्रंश

जिन विद्वानों ने अपभ्रंश को भाषिक विकास की अवस्था माना, उन्होंने अपभ्रंश के अनेक भेद माने -

मार्कण्डेय - कुछ लोग 27 भेद मानते हैं

विष्णुधर्मोत्तर - अनंत भेद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ. घोरेन्द्र नाथ ने प्रत्येक प्राकृत की अपभ्रंस अवस्था मानी –

मागधी प्राकृत – मागधी अपभ्रंस
अर्द्धमागधी प्राकृत – अर्द्धमागधी अपभ्रंस
पैशाची प्राकृत – पैशाची अपभ्रंस
शौरसेनी प्राकृत – शौरसेनी अपभ्रंस
महाराष्ट्री प्राकृत – महाराष्ट्री अपभ्रंस

वस्तुतः अपभ्रंस साहित्य के ऐसे प्रमाण नहीं मिल पाए हैं जिससे इस बात की पुष्टि हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

दक्खिनी हिन्दी 'पश्चिमी हिन्दी' उपभाषा वर्ग की बोली है जिसका प्रयोग क्षेत्र ऐतिहासिक कारणों के कारण पश्चिमी हिन्दी के मूल क्षेत्र से अलग है। यह बोली दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि राज्यों में बोली जाती है।

मुख्यतः इसका प्रयोग बीदर, बरार, गोलकुण्डा, बीजापुर, अहमदनगर, मुम्बई तथा हैदराबाद का क्षेत्र है।

दक्खिनी हिन्दी की भाषागत विशेषताएँ

- ध्वनि सम्बन्धी विशेषताएँ

मूलतः यह बोली के सभी स्वर दक्खिनी हिन्दी में मौजूद है तथा व्यंजनों में भी क, ख, ग, ज़, फ़ इत्यादि व्यंजनों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक होता है।

अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति -
झंकार - जंकार, घट - गट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कहीं-कहीं महाप्राणीकरण भी
  - पहचानते → पहछानते
- सघोष ध्वनियों का अघोषीकरण
  - खूबसूरत → खपसूरत
- आरम्भिक वर्ण का ह्रस्वीकरण
  - आदमी → अदमी
- ध्वनि विपर्यय
  - मतलब - मतबल
  - लखनऊ - नखलऊ

व्याकरणिक विशेषताएँ

संज्ञा व कारक व्यवस्था

कर्त्ता - नै, ने या 0
कर्म - को, कूँ, कः
करण - से, तैं, सूँ
सम्प्रदान - वास्ते, खातिर
अपादान - से, तैं, सूँ
सम्बन्ध - का, केरा, की
सम्बोधान - अई, ओ, ए, अरे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

सर्वनाम - अन्यपु - उन्न, उन्ने
मध्यम पु - तुम, तुमहिं
उत्तम पु - हमकुं, हमार

विशेषण - लगभग खड़ीबोली के ही विशेषण
आकारान्त विशेषण विशेष्य के अनुसार परिवर्तित होते हैं -
आती हुई लड़की → आतियां हुईयाँ लड़कियाँ
संख्यावाचक विशेषण - आठ - आट
छह - छे
उन्नीस - उन्नीस

क्रियारूप
वर्तमान - जलता, जाता
भूत - ~~चल~~ चलया, ध्या
भविष्य - चलेंगे, चलूंगे
क्रिया के भूतकाल में यकार शब्द का प्रयोग - रोका - रोयका

शब्दावली
मूलतः खड़ीबोली के स्थ्य विशुद्ध वाली दक्खनी के बाद दक्खिनी हिंदी का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

फारसीकरण हो गया तथा अरबी-फारसी शब्दावली अपेक्षाकृत ज्यादा हो गई।

वस्तुतः ~~यह~~ दक्खिनी हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति तथा गंगा-जमुनी तहज़ीब की जीवन्त परिचायक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिंदी की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this

प्रारंभिक हिन्दी अथवा पुरानी हिन्दी को आधुनिक आर्यभाषा माना जाता है जिसका समय 13वीं - 14वीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इस भाषा को पुरानी हिन्दी नाम चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने दिया तथा रोडाकृत 'राउलवेलि' में पुरानी हिंदी के आरम्भिक प्रमाण मिलते हैं।

व्याकरणिक विशेषताएँ ⟶

- ध्वनि सम्बन्धी विशेषताएँ

स्वर – अपभ्रंश / अवहट्ठ के सभी स्वर तथा ऐ, औ, का प्रयोग बढ़ा जैसे बैल, चौड़ा।

– ऋ का प्रयोग प्राय: नहीं होता था तथा उसे अ, इ, उ, रि में बदल दिया जाता था।
जैसे - कृष्ण - कन्ह, ऋण - रिण

– कहीं-कहीं स्वरभक्ति भी दिखाई देती है जहाँ व्यंजन संयोग को सरल बनाने हेतु मध्य में स्वर लाया जाता था।
क्रिया – किरिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- कहीं-कहीं स्वरों का ह्रस्वीकरण या दीर्घीकरण भी देखने को मिलता है

व्यंजन - अपभ्रंश / अवहट्ट के सभी स्वर तथा ण, ङ, न आ गए थे।

- संस्कृत शब्दों में 'श' का प्रयोग होता था किन्तु 'ष' का नहीं।

- सरलता के लिए जटिल व्यंजन संयोगों को द्वित्वीकृत कर दिया जाता था तथा द्वित्वीकरण से हुई व्यंजन की क्षति के लिए क्षतिपूरक दीर्घीकरण किया जाता था।

उदा॰ - कर्म → कम्म → काम

धर्म → धम्म → धाम

- पश्चिमी हिन्दी में न का ण तथा क्ष का 'छ' का प्रयोग जाता था जबकि पूर्वी हिन्दी में ण का न तथा ड़ का 'ख' का प्रयोग होता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक विशेषताएँ

संज्ञा एवं कारक व्यवस्था
- निर्विभक्तिक प्रयोग होने लगे
- कहीं-कहीं कारक और विभक्ति दोनों
- कभी सब्द पहले स्वरान्त फिर व्यंजनान्त

सर्वनाम -

	एक.	बहु.
उ.पु.	मैं, मई	हमहुँ, हमार
म. पु.	तुम तुम्ह	तुम्हार, तोहर
अ. पु.	वह उन्ह	उनका, वे

विशेषण - लिंग वचनानुसार परिवर्तित

क्रिया रूप

	पश्चिमी हिन्दी	पूर्वी हिन्दी
वर्तमानकाल	करता (ता रूप)	~~करता~~ करत ~~(ता रूप)~~ (त रूप)
भूतकाल	थका (आ रूप)	गयल (ल रूप)
भविष्यकाल	जाएगा (ग रूप)	जाइब (ब रूप)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी पूर्वी हिन्दी उपभाषा की बोली है जो अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है।

अवधी प्रयोग का पहला उदाहरण राउलवेल में मिलता है जिससे पता लगता है कि 13वीं सदी के अंत तक अवधी एक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई थी।

अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयोग प्रेमाश्रयी काव्यधारा के कवियों ने किया। सौभाग्य से संभवत: ही लोकप्रियता को जनभाषा के रचने हेतु अवधी भाषा तथा दोहा-चौपाई की कड़वकबद्ध शैली रूढ़ सी हो गई।

मुल्ला दाऊद की चन्दायन या लोरिकहा अवधी में लिखी गई पहली रचना है जो एक सामाजिक प्रेमकथा प्रतीत होती है।

इसकी को सर्वाधिक समृद्ध किया कुतुबन जायसी ने जिन्होंने ठेठ अवधी में 14 रचनाएँ लिखी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कान्हावत आदि रचनाओं में ठेठ अवधी की मिठास तथा माधुर्य दृष्टिगत होता है।

जायसी ने तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है तथा उनका अवधीकरण करने के लिए उनमें 'अ' प्रत्यय जोड़ लिया है। जायसी की भाषा में लोकभाषा की ठेठ झलक दिखती है-

दैंगरा - अवध क्षेत्र में मानसून की पहली वर्षा

कहार नींद - माघ मास की वर्षा

रामकाव्यधारा में अवधी - तुलसी संस्कृत के विद्वान थे तथा उन्होंने संस्कृत शब्दों का अवधीकरण किया है। तुलसी की अवधी तत्समीकृत अवधी है।

अनुप्रास की छटा, ध्वनि तथा नाद सौंदर्य के रूप की प्रांजलता तथा उपमानों की नवीनता की माँग जैसी विशेषताएँ तुलसी के काव्य में दिखती हैं।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

हिन्दू प्रेमाख्यानक — कुतबन, नरपतिनाल, नाभादास ने ~~अवधी~~ अवधी में अपभ्रंश तथा संस्कृत का छूटता उपयोग किया है, जो कि आख्यानकी रही है।

वर्तमान स्थिति — वंशीधर शुक्ल, बलभद्र प्रसाद दीक्षित, चंद्रशेखर द्विवेदी जैसे रचनाकार हिन्दू साहित्य में लाती रही आई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने "हिन्दी साहित्य और संवेदना ~~का~~ ~~विक~~ विकास" नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें शुक्ल जी तथा द्विवेदी जी इतिहास दृष्टियों का समन्वय किया है। यह समन्वय रचना के नामकरण से ही स्पष्ट है जहाँ 'संवेदना' शब्द शुक्ल जी की युगीन परिस्थितियों का परिचायक है वहीं 'विकास' शब्द द्विवेदी जी की परम्परा तत्व पर बल देता है।

— मूलतः शुक्ल जी इतिहास दृष्टि का पालन करते हुए भी उन्होंने वीरगाथाकाल तथा कबीर के महत्व के प्रश्न पर आचार्य शुक्ल को पुनर्परिभाषित किया।

— वे भाषा तथा ~~काल~~ रचनाकार के सम्बन्ध में गहरे अन्तर्सम्बन्ध तलाशते हैं जैसे ~~प्रेम~~ अज्ञेय की गद्य भाषा तत्समी है क्योंकि उनमें गंभीर चिंतन है जबकि अज्ञेय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की कविता की भाषा तद्भव है क्योंकि यह अनुभूति प्रधान है।

- बिहारी के दोहों तथा मुगलकालीन शृंगारिक शायरी में उन्होंने गहरा अन्तर्सम्बन्ध बतलाए।

- भक्ति तथा शृंगार के अन्तर्विरोध को सुलझाते हुए उन्होंने इसका मूल भारतीय संस्कृति में खोजा जहाँ राम विशुद्ध मर्यादामूलक है वहीं कृष्ण कलात्मक तथा चंचल है।

- चतुर्वेदी जी ने नवजागरण को दो विरोधी संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा माना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मनोवैज्ञानिक कहानी का परिचय

मनोवैज्ञानिक कहानी उन कहानी को कहा जाता है जिसमें मानव मन की सूक्ष्म तहों को साहित्य की कहानी विधा के माध्यम से उघाड़ा जाता है।

यूँ तो प्रेमचन्द से लेकर प्रसाद तक सभी रचनाकार मनोविज्ञान पर आधारित कहानियाँ लिखते रहे हैं जैसे - प्रेमचन्द की ईदगाह कहानी बाल मनोविज्ञान की सर्वश्रेष्ठ कहानी है तो प्रसाद की पुरस्कार, छाया कहानियाँ मानव मन की परतों को खोलती है।

मनोवैज्ञानिक कहानी का सबसे सशक्त रूप मनोविश्लेषणात्मक लेखकों में दिखाई पड़ता है जहाँ लेखकों ने फ्रायड के सिद्धान्तों को आधार बनाकर मानव मन का विश्लेषण किया है—

प्रमुख कहानीकार

जैनेन्द्र — गांधीवाद व मनोविश्लेषणवाद का मिश्रण
— खेल, पाजेब, जाह्नवी कहानियाँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय – अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद तथा इलियट का संश्लेषण

– परंपरा, जयदोल, पठार का धीरज, त्रिपथगा कहानियाँ

इलाचन्द्र जोशी – फ्रॉयड का अंधानुकरण ~~हाती~~

– स्त्रीमय, मोहिनी, पतिव्रता या पिशाची, होली ~~उड़ीली~~ कहानियाँ

इनके अलावा नई कहानी आन्दोलन में मध्यवर्गीय स्त्रीपुरुषों के मनोविज्ञान को आधार बनाकर कहानियाँ लिखी गई

मन्नू भंडारी – त्रिशंकु, यही सच है

राजेन्द्र यादव – जहाँ लक्ष्मी कैद है, ~~अभिमन्यु~~ नायिका

कमलेश्वर – खोई हुई दिशाएँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा की भिन्नताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संतकाव्यधारा तथा सूफी काव्यधारा भक्तिकाल की दो काव्यधाराएँ जो मूलतः निर्गुण काव्यधारा में शामिल हैं। इनके अन्तर -

- दर्शन - संतकाव्यधारा के कवियों का कोई निश्चित दार्शनिक आधार नहीं है, वे बहुश्रुत परंपरा के हैं जबकि सूफी एक निश्चित दर्शन 'तसव्वुफ' को मानते हैं।

- ईश्वर के प्रेम की पद्धति - संतकवि खुले तौर पर ईश्वर के प्रेम का इज़हार करते हैं जबकि इस्लाम में ईश्वर के प्रेम की मनाही के कारण सूफी ईश्वर से एकत्व की अनुभूति को भावनात्मक रहस्यवाद के माध्यम से छिपाकर व्यक्त करते हैं।

- प्रकृति तत्व - संतकवियों का ईश्वर परम या अलौकिक किस्म का है जबकि सूफी बहिर्मुखी रहस्यवाद के चलते प्रकृति को अपने विभाव पक्ष में शामिल करते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जगत - संतकवि जगत को मिथ्या/माया मानते हैं जबकि सूफी जगत को ईश्वरीय अभिव्यक्ति मानते हैं तथा जगत की वास्तविक सत्ता स्वीकारते हैं।

शिल्प संबंधी अन्तर -

	संत	सूफी
भाषा	सधुक्कड़ी	अवधी
काव्यरूप	मुक्तक	प्रबंध
छंद	दोहा, पद, रमैनी, फाग	दोहा, चौपाई, मसनवी शैली

नारी संबंधी दृष्टिकोण - संतकवि नारी को माया रूप मानकर साधना में बाधक मानते हैं जबकि सूफी कवि नारी को खुदा के रूप में देखते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(घ) आंचलिक कहानी

आंचलिक कहानी का अर्थ है कि जिस कहानी में बिना वैचारिक पूर्वाग्रहों के किसी अंचल की विशेषताओं को ज्यों का त्यों चित्रित कर दिया गया हो।

हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों की परम्परा तो समृद्ध है किन्तु कहानी में आंचलिकता देखने को कम ही मिलती है। फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल, परती परीकथा, नागार्जुन के बलचनमा, रतिनाथ की चाची, रामदरश मिश्र के बहते पानी और जल टूटता हुआ इत्यादि हिन्दी के उल्लेखनीय आंचलिक उपन्यास हैं।

कहानी के क्षेत्र में फणीश्वरनाथ रेणु ने ही आंचलिकता को आरम्भ एवं चलित बनाया है। रेणु ने अपनी कहानियों में स्थानीय लोकभाषा लोकसंगीत का प्रयोग करते हुए तथा स्थानीय भूगोल व संस्कृति का वर्णन करते हुए अपनी कहानियों में अंचल का सम्पूर्ण चित्र खींचा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेणु के अलावा नागार्जुन ने वरुण के बेटे, रांगेय राघव ने लहू और आदमी इत्यादि कहानियों में आंचलिकता के चित्र खींचे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) इप्टा

इप्टा का अर्थ इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन से है जिसकी स्थापना 25 मई 1943 को हुई। इप्टा का नामकरण रोमा रोलाँ की पुस्तक 'पीपुल्स थियेटर' के आधार पर पड़ा।

इप्टा अपने समय के प्रगतिशील नाटकों के मंचन हेतु जाना जाता है। प्रमुख प्रगतिशील लेखक- रांगेय राघव, उपेन्द्रनाथ अश्क, रामकुमार वर्मा इत्यादि इप्टा से जुड़े रहे थे।

इप्टा ने सरल भाषा एवं छोटे मंचों के साथ प्रगतिशील चेतना को समाज के निचले से निचले तबकों तक पहुँचाने का प्रयास किया। इब्राहिम अल्काज़ी, सत्यदेव दुबे, हबीब तनवीर जैसे रंगकर्मी भी एक समय तक इप्टा से जुड़े रहे थे।

इप्टा आज भी अपने मंचीय कलाकारों तथा प्रतिभा के साथ हिन्दी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रंगमंच को समृद्ध करने में लगा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन-परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान अप्रतिम है लेकिन उसकी कई सीमाएँ भी हैं। विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में केन्द्रीय व्यक्तित्व हैं तथा इस तथ्य का प्रमाण यह है कि हिन्दी आलोचना का काल विभाजन भी उन्हें केन्द्र में रखकर किया गया है।

आचार्य शुक्ल ने हिन्दी नागरी सभा द्वारा लिखित पुस्तक की भूमिका के रूप में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा जिसमें उन्होंने परिपक्व इतिहास दृष्टि तथा वैज्ञानिक काल विभाजन व कालों का नामकरण का भी प्रयास किया। शुक्ल जी मूलतः पश्चिम में टेन के विधेयवाद से प्रभावित थे तथा साहित्य के मूल्यांकन में युगीन परिस्थितियों (जाति, क्षण, वातावरण) का ध्यान रखते थे। साथ ही वे पारम्परिक रसवाद तथा लोकमंगलवाद का संश्लेषण करते हुए रस की लोकमंगलवादी व्याख्या भी करते हैं। उनके इतिहास लेखन की तमाम विशेषताओं के बावजूद कुछ सीमाएँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी हैं —

- युगीन परिस्थितियों को अत्यधिक महत्व देने के कारण शुक्ल जी रचनाकार के व्यक्तित्व तथा परम्परा को महत्व नहीं दे पाते।
  जैसे - कबीर की अक्खड़ता का कारण उन्होंने इस्लामी एकेश्वरवाद में खोजा तथा भक्तिकाल के उद्भव के कारण के रूप में इस्लाम के आगमन को बतलाया।

- प्रबंध काव्य, लोकमंगल तथा संप्रेषणीयता के प्रति आग्रह रखने के कारण शुक्ल जी मुक्तकों, कबीर, तथा छायावाद को महत्व नहीं दे पाते।

- सहजता पर अत्यधिक बल देने के कारण उन्होंने रहस्यवाद तथा प्रतीकों के प्रयोग की उन्होंने सामान्यतः आलोचना की।

- समकालीन साहित्य में प्रेमचंद व छायावादी कवियों को उन्होंने बिल्कुल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी महत्व नहीं दिया।

- आदिकाल के नामकरण में ~~[illegible]~~ मुख्य प्रवृत्ति पर बल देते हुए उन्होंने इसे वीरगाथाकाल कहा जबकि मुख्य प्रवृत्ति भी तो बहुलांश का एक छोटा सा अंश हो सकती है, यह नहीं सोचा।

- सिद्ध-नाथों की रचनाओं को धार्मिक-साम्प्रदायिक मान्यताओं के शुष्क प्रचार मात्र कहकर साहित्य कोटि से बाहर कर देते है।

- उनका काल विभाजन भी त्रुटिपूर्ण है। भक्तिकाल के अन्त में ही रीतिकालीन प्रवृत्तियाँ दिखने लगती हैं तथा आधुनिक काल के आरंभ में भी रीतिकालीन प्रवृत्तियाँ बनी रहती है।

वस्तुतः आचार्य शुक्ल के इतिहास लेखन ~~विशेषताएँ~~ की सीमाएँ उनकी व्यक्तिगत दोष न होकर तथ्यों की अनुपलब्धता तथा प्रमाणों की कमी की वजह से है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दलित-जीवन की अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी कहानी पर विचार कीजिये। 15

दलित जीवन की अभिव्यक्ति हेतु हिन्दी कहानी को दो अनुभागों में विभक्त करके देखा जा सकता है-

1. सामान्य परम्परा के लेखकों द्वारा दलित समस्याओं पर लेखन

- जहाँ प्रेमचन्द ने मंत्र, ठाकुर का कुँआ, सद्गति, दूध का दाम में दलित जीवन का मार्मिक चित्रण किया वहीं उनकी सीमा यह रही कि उनके दलित चरित्र संघर्ष चेतना अथवा क्रांति चेतना से युक्त नहीं है।

- उदयप्रकाश की टेपचू, राजेन्द्र यादव की दो दिवंगत इत्यादि अन्य दलित चेतना की कहानियाँ हैं।

किन्तु दलित रचनाकार तथा अम्बेडकरवादी उपर्युक्त साहित्य को दलित साहित्य नहीं मानते। वे मानते हैं कि स्वानुभूति से लिखा गया साहित्य ही प्रामाणिक है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति को ही दलित साहित्य माना जाना चाहिए।
रता। द्वारा अनुभव है

2. दलित लेखकों द्वारा दलित समस्याओं का चित्रण

मोहनदास नैमिशराय - अपना गाँव
(गाँव में ही शक्ति है)

ओमप्रकाश वाल्मीकि - सलाम
(दूल्हों द्वारा सवर्णों को सलाम की प्रथा)

जयप्रकाश कर्दम - लाठी, चमार
(दलित एकता)

इसके अलावा दलित महिलाओं द्वारा भी लेखन महत्वपूर्ण है -

सुशीला टाकभौरे - सिलिया
उषा चंद्रा - लोकतंत्र में नगरी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन महिलाओं को दोहरे संदर्भों से गुजरना पड़ता है एक तो पितृसत्तात्मकता तथा दूसरा वर्णों से।

वस्तुतः दलित लेखन की परम्परा प्रेमचन्द के हाथों शुरू हुई तथा अन्ततः दलित लेखकों के हाथों परिपक्वता को प्राप्त कर रही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पारसी रंगमंच की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पारसी रंगमंच 18 वीं सदी में अंग्रेजी नाट्यशालाओं से प्रभावित होकर शुरू हुआ व्यवसायिक रंगमंच है जिसमें वेतनभोगी कलाकारों के साथ देशभर में नाटक मंचन किए गए।

1779 ई. में अंग्रेजों की ताल बागान नाट्यशाला तथा कलकत्ता थियेटर से प्रभावित होकर मुम्बई के पारसी कलाकारों ने 1853 ई. में पहले शौकिया तथा बाद में व्यवसायिक रंगमंचों की स्थापना की।

पारसी नाटक मण्डलियाँ -

दि पारसी नाटक कम्पनी
शेक्सपियर थियेट्रिकल कम्पनी
मून लाइट थियेटर्स

रंगकर्मी - राधेश्याम कथावाचक
आगा हश्र कश्मीरी
नारायण प्रसाद बेताब

नाटक - रामायण, महाभारत, लैला मजनूं, वीर अभिमन्यु, कृष्ण अवतार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएँ

- पर्दों पर आधारित मंच, साँझी दृश्य, चमक-दमक की मंचसज्जा
- उथले व हास्य पैदा करने वाले संवाद
- स्तरहीन गीत, नृत्य
- अतिनाटकीयता, तड़क-भड़क वाला अभिनय
- बेतरतीबी कलाकार, व्यावसायिकता
- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक विषय एवं पौराणिक कथाएँ
- फारसी प्रेमकथाएँ, अंग्रेजी आधारित नाटक

उदाहरण

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation